

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH
Research Journal

वर्ष 11 अंक 2

अगस्त, 2024

Bi-annual

Bi-lingual

**A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.**



अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2700 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1100 (5 years)	Rs. 3000 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the ‘**Sanskritik Pravah**’ **Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

आन्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com

: ramsjaipur@gmail.com

website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)

094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Pinkcity Book Manufactures, Kukas, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 11 अंक 2

अगस्त 2024

अर्द्धवार्षिक

द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए समर्पित एक बहु-विषयात्मक
सहकर्मी समीक्षित (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad

Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya
Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Prof. Alpana Kateja

Vice Chancellor,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri

Ex Vice Chancellor, Central University of
Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Prof. M. L. Chhipa

Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma

Ex Vice Chancellor, Gautam Buddha University,
Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma

Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh

Ex Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University,
Sikar (Raj.)

Prof. Vibha Upadhyay

Ex Head, Department of History and
Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Dr. Shreerang Godbole

Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharashtra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma

Ex Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal

Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta

Secretary,
Jan Kalyan Sansthan, Jaipur
E-mail : gsgupta1960@gmail.com
Mobile : 09460070031

Associate Editor

Dr. Indrajeet Bhattacharya

Member, Museum Association of India,
Member, ICOMOS INDIA
Res. : 143, Indira Colony, Bani Park, Jaipur
E-mail : indrajeet201070@gmail.com
Mobile : 9571806910

Editorial Board

Dr. Sunil Asopa

Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Suraj Rao

Deputy Registrar
MDS University, Ajmer (Raj.)
E-mail : suraj1973@gmail.com
Mobile : 94602 46641

Dr. Pramila Dubey,

Dean, faculty of Education
(University of Rajasthan), Principal,
SSG Pareek P.G. College of Education, Banipark, Jaipur
Mobile : 09413156597

Dr. Kailash Chand Gurjar

Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile : 09929089995

Dr. Jayanti Lal Khandelwal

Assistant Professor,
Apex University, Jaipur (Raj.)
Email : jl1974khandelwal@gmail.com
Mobile : 9314640220

About Contributors of this issue

1. डॉ. सुखदेव राव

आपने एम ए राजस्थानी साहित्य में तथा पीएच.डी. राजस्थानी नाटक साहित्य में की है। आपने यू.जी.सी. नई दिल्ली से नेट जेआरएफ तथा जयनारायण व्यास वि.वि. में 8 वर्षों तक अतिथि शिक्षक के रूप में सेवाएँ भी दी। आप अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण एवं संवर्धन संस्थान के 10 वर्ष राष्ट्रीय महासचिव, 3 वर्ष संगठन मंत्री रहे तथा अभी राष्ट्रीय सचिव हैं, आप राजस्थानी भाषा की एक मासिक पत्रिका 'रूडौ राजस्थान' के संपादक एवं प्रकाशक भी हैं, साथ ही आपने वंशावली पर 'ओळख' और 'पिछण' नाम से दो पुस्तकें भी लिखी हैं।

2. मधुरा गजानन डांगे

शोधार्थी (इतिहास), इंडस विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)। इनके कई शोध आलेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

3. डॉ. अंकश्री भार्गव

एम. ए. (भूगोल), एम. एड., नेट (शिक्षा शास्त्र), पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। विगत 14 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र के शिक्षण कार्य कर रही हैं। अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित।

सम्प्रति - एस. एस. जी. पारीक पी.जी कॉलेज आफ एजुकेशन जयपुर में, सहायक आचार्य।

4. डॉ. सुनील कुमार गुप्ता

आपने 'सतनामी सम्प्रदाय का चिंतन एवं आचार्य परम्परा' विषय पर शोध कार्य किया है। आपके 04 रशोध पत्र प्रकाशित हैं। आप अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग ले चुके हैं।

सम्प्रति - आप बाबा खींवादास पी.जी. कॉलेज सांगलिया, सीकर (राज.) में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं।

5. डॉ. प्रमिला दुबे

अधिष्ठात्री (डीन), शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 25 वर्षों का शिक्षण कार्य अनुभव। शिक्षा मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र और शिक्षण विधियों पर 10 से अधिक पुस्तकों का लेखन, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में 50 से अधिक लेख प्रकाशित। 8 विद्यार्थियों का विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि के लिए निर्देशन।

सम्प्रति - एस.एस.जी. पारीक शिक्षा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर में प्राचार्य।

6. डॉ. रजनी मीणा

एम.ए. पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। 'राजपूताने के सैनिकों का विदेशी अभियान' विषय पर शोध कार्य, भारतीय संस्कृति की धाराएँ, Economic and Social History of Ancient India, राजपूताने की सेना, ब्रितानी साम्राज्यवाद और वैदेशिक अभियान एवं इम्पीरियल सर्विस टूप नामक पुस्तकों का प्रकाशन। अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन।

सम्प्रति - राजकीय महाविद्यालय, जयपुर के इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग में सह आचार्य।

7. **डॉ. आरती शर्मा**

एम.ए. (हिन्दी) एम.एड., पीएच.डी. (शिक्षा शास्त्र) 17 वर्ष का शिक्षक अनुभव, अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन, अनेक पुस्तकों में लघु लेखों का प्रकाशन।

8. **डॉ. सूरज राव**

विगत 20 वर्षों से भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास पर शोध कार्य। लगभग 132 शोध पत्र जिसमें 60 शोध पत्र भारतीय और विदेशी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित। 10 पुस्तकें प्रकाशित। सहायक प्राध्यापक इतिहास, मेवाड़ विश्वविद्यालय।

सम्प्रति – महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में उप कुलसचिव के पद पर कार्यरत हैं।।

9. **तन्मय भट्टाचार्य**

महाविद्यालय में सामाजिक विज्ञान समूह में सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध के पुरस्कार से सम्मानित, हिंदी, बंगाली, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान, ब्राह्मी और शारदा जैसी लिपियों में कुशल।

सम्प्रति : लखनऊ विश्वविद्यालय से 'एआईएच और पुरातत्त्व' में परास्नातक, यू.जी.सी. नेट परीक्षा उत्तीर्ण।

10. **डॉ. अरुण सिंह**

सहायक आचार्य के रूप में पिछले 11 वर्षों से राजस्थान विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापन करा रहे हैं। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन पर शोध कार्य कर रहे हैं तथा साथ ही पाँच पीएच.डी. छात्रों का शोध निर्देशन भी कर रहे हैं। इनके कई शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं।

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

	पृष्ठ संख्या
संपादकीय ...	8
1. गौरवशाली परम्परा है - वंशावली लेखन	10
– डॉ. सुखदेव राव	
2. इतिहास का लोकशास्त्रीय स्वरूप	15
– मधुरा गजानन डांगे	
3. श्रीमद् भागवत गीता में प्रतिपादित कर्म, ज्ञान एवं भाव-विकास के परिप्रेक्ष्यों की शैक्षिक उपादेयता	23
– डॉ. अंकश्री भार्गव	
4. सतनामी सम्प्रदाय का सांस्कृतिक अवदान : राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में	35
– डॉ. सुनील कुमार गुप्ता	
5. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का संतात्ये	42
– डॉ. प्रमिला दूबे	
6. दक्षिण-पूर्वी एशिया में भारतीय सभ्यता का सूर्योदय	47
– डॉ. रजनी मीणा	
7. श्री रामचरितमानस की मानव जीवन में शैक्षिक उपयोगिता	56
– डॉ. आरती शर्मा	
8. मिथक इतिहास और पौराणिक वाङ्मय	71
– डॉ. सूरज राव	
9. Veddas of Sri Lanka and their Indian Anthropological connection	82
– Tanmoy Bhattacharya	
10. The House Was Once a Home: Memory, Madness and Magic Realism in Siddhartha Gigoo's "The Incurable Madness of the Municipal Commissioner"	93
– Dr. Arun Singh	
● Guidelines for authors	102
● Review & Publication Policy, Ethics Policy	105

सेक्युलर सिविल कोड की ओर बढ़ते कदम

इस 15 अगस्त को लाल किले से देश को संबोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, “जो कानून धर्म के नाम पर बाँटते हैं, उन्हें दूर किया जाना चाहिए। देश का एक बहुत बड़ा वर्ग मानता है कि जिस सिविल कोड को लेकर हम जी रहे हैं, वो सचमुच में एक कम्युनल और भेदभाव करने वाला है।” उन्होंने कहा, “जो कानून धर्म के आधार पर बाँटते हैं, ऊँच-नीच का कारण बन जाते हैं, उन कानूनों का आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं हो सकता। अब देश की मांग है कि देश में सेकुलर सिविल कोड हो।” प्रधानमंत्री जी ने भारत में लागू विभिन्न सिविल कोड (व्यक्तिगत कानूनों) की ओर इशारा करते हुए यह बात कही।

एक ही देश के नागरिकों पर अलग-अलग कानून और वह भी मजहब के आधार पर भेदभाव करते हुए- यह कोई अच्छी स्थिति नहीं कही जा सकती। एक हिंदू को 1955 से पूर्व एक से अधिक पत्नियाँ रखने का अधिकार था, इस अधिकार को एक पत्नी तक सीमित कर दिया गया। बेशक, यह अच्छा ही हुआ। यह कदम स्त्री सशक्तिकरण के लिए उठाया गया था। परन्तु यह अच्छी बात मुस्लिम नागरिकों पर लागू नहीं की गई। क्या मुस्लिम स्त्रियों को ऐसे सशक्तिकरण की आवश्यकता नहीं है? इसमें धर्म या मजहब का प्रश्न कहाँ से आ जाता है? एक निःसंतान हिंदू महिला बच्चा गोद ले सकती है, परन्तु मुस्लिम महिला या ईसाई महिला नहीं। सम्पत्ति उत्तराधिकार के लिए अलग-अलग मजहब की महिलाओं के लिए अलग-अलग कानून बने हुए हैं। हिंदू लड़कियाँ अपने माता-पिता की संपत्ति में बराबर का अधिकार रखती हैं, परन्तु पारसी लड़की यदि दूसरे रिलीजन के पुरुष से विवाह कर ले तो उसे संपत्ति से बेदखल कर दिया जाता है। मर्जी से तलाक लेने के लिए हिंदुओं को 6 माह तो ईसाइयों को दो वर्ष तक अलग-अलग रहना पड़ता है। मुसलमानों में तो तुरंत ही लागू हो जाता है। ईसाई विधि में महिला को अपने बच्चे का ‘नेचुरल गार्जियन’ नहीं माना जाता जबकि अविवाहित हिंदू महिला को बच्चे का ‘नेचुरल गार्जियन’ माना जाता है। ऐसे ढेरों उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनके संबंध में रिलीजन के आधार पर भारत के नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। यह तथ्य ही अपने आप में संविधान के अनुच्छेद 12, 14, 15 आदि का उल्लंघन है।

देश के 80 प्रतिशत (रिलीजन से हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध) नागरिकों पर समान सिविल कोड लागू किया जा चुका है। शेष बचे ईसाई, मुसलमान व पारसी नागरिकों को क्यों नहीं आधुनिक युग के अनुसार व्यक्तिगत कानूनों के अधीन किया गया? क्या ये लोग विश्व में सभी के लिए मान्य किए गए मानवाधिकार को प्राप्त करने और हर मामले में एक गरिमामय जीवन जीने के अधिकारी नहीं हैं?

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड व अन्य मुस्लिम नेतृत्व सभी देशवासियों को एक जैसे कानूनों के अंतर्गत लाने को अपने मजहब में हस्तक्षेप मानते हैं।

इस देश में एक संविधान लागू है। मुस्लिम समाज बार-बार संविधान की दुहाई देता रहता है कि उन्हें संविधान में अधिकार मिले हुए हैं और यह भी कि देश व प्रांत की सरकारों को संविधान के अनुसार कार्य करना चाहिए। उसी संविधान के अनुच्छेद 44 में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता लागू करने का दायित्व राज्य को दिया गया है। जब इस अनुच्छेद को क्रियान्वित करने की बात आती है तो कहा जाता है कि हमारे मजहब में हस्तक्षेप किया जा रहा है। आखिर कौन इसका निर्णय करेगा? संविधान ने यह कार्य न्यायपालिका को सौंपा है।

देश का सर्वोच्च न्यायालय एवं कई उच्च न्यायालयों द्वारा अनेक बार भारत सरकार को अनुच्छेद 44 लागू करने के निर्देश दिए गए हैं। 1985 के शाहबानो के मामले में और फिर 1995 के सरला मुद्गल के मामले में और इसके बाद भी कई अन्य मामलों में सर्वोच्च अदालत ने कहा है, “संसद को एक समान नागरिक संहिता की रूपरेखा बनानी चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसा साधन है जो कानून के समक्ष समान सद्भाव और समानता का अवसर देता है।” और यह भी “रिलीजन और व्यक्तिगत विधि में कोई संबंध नहीं है” व्यक्तिगत विधि के संबंध में कानून बनाए जाने को मजहब में हस्तक्षेप नहीं माना जा सकता। व्यक्तिगत विधि के विषयों (यथा एक विवाह-बहुविवाह, तलाक, उत्तराधिकार, संरक्षता, दत्तक ग्रहण, भरण-पोषण आदि) का क्षेत्र लौकिक-समाज से जुड़ा हुआ है न कि मजहब या रिलीजन से।

यह स्वागत योग्य है कि भारत के एक राज्य उत्तराखण्ड ने अपने राज्य के सभी नागरिकों के लिए, चाहे वे किसी भी धर्म या रिलीजन को मानते हों, एक सेक्युलर यूनiform सिविल कोड बनाने के लिए कदम बढ़ाए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार विगत 7 फरवरी, 2024 को उत्तराखण्ड की विधानसभा से संबंधित विधेयक पारित किया जाकर इसे 12 मार्च, 2024 को राष्ट्रपति जी की स्वीकृति मिल गई है। आशा है कि शीघ्र ही नियमावली बनाई जाकर इस अधिनियम को प्रभावी बनाया जाएगा। यह भी आशा की जा सकती है कि अन्य राज्य उत्तराखंड का अनुसरण करेंगे।

- रामस्वरूप अग्रवाल

Guideline For Authors

1. Articles should be submitted through e-mail us at editor.sprj@gmail.com or ramsjaipur@gmail.com. A hard copy of the same must be sent by post or by hand.
2. The manuscript should be typed in Page Maker or M.S. Word on A4 size paper. For Hindi, use 14 point font size for text, 25 point size for main heading and 15 point font size for sub headings. For English, use 12 point font size for text, 24 point size for main heading and 13 point font size for sub headings. For English, use Times New Roman Font and for Hindi, Devlys 010 or Chanakya Font.
3. All references should be given at the end of the article.
4. For the Citation and References, Guidelines specified in the Publication Manual of the American Psychological Association (6th edition, 2009) must be followed.
5. All acknowledgements if any, should be given at the end of the article and before the references.
6. Care should be taken to avoid spelling error & grammatical mistakes.
7. If 'Slokas' from Sanskrit text are referred in any article, please give their Hindi translation also.
8. The article / research paper shall be published subject to recommendation of referees.
9. Author should furnish their short introduction, mailing address, e-mail and phone / mobile numbers.

Detailed Submission Guideline

1. Manuscript:

The manuscript should be structured as follows:

- Cover page, showing title of the paper, name of author, author's affiliation and institutional address with pin code, email id and a 200–250 word abstract.
- Authors' names and references should not be used in the text in order to keep authors' anonymity (e.g., 'as the author has written elsewhere' should be avoided). In case there are two or more authors, then corresponding author's name and address details must be clearly specified on the first page itself.
- The contributors should also provide 4–5 keywords for online search.
- Text should start on a new page, and must not contain the names of authors.
- References should come at the end of the manuscript.
- Tables and figures should be provided in editable format and should be referred to in the text by number separately (e.g., Table 1) not by placement (e.g., see Table below). They should each be submitted on a separate page following the article, numbered and arranged as per their references in the text. They will be inserted in the final text as indicated by the author. Source citations with tables and figures are required irrespective of whether or not they require permissions.
- Figures, including maps, graphs and drawings, should not be larger than page size. They should be numbered and arranged as per their references in the text. All photographs and scanned images should have a resolution of minimum 300 dpi and 1500 pixels and their format should be TIFF or JPEG. Permissions to reprint should be obtained for copyright protected photographs/images. Even for photographs/images available in the public domain, it should be clearly ascertained whether or not their reproduction requires permission for purposes of publishing. All photographs/scanned images should be provided separately in a folder along with the main article.
- Mathematical formulae, methodological details etc. should be given separately as an appendix, unless their mention in the main body of the text becomes essential.

2. Language

- a. The language and spellings used should be British (U.K.), with 's' variant, e.g., globalisation instead of globalization, labour instead of labor. For non-English and uncommon words and phrases, use italics only for the first time. Meaning of non-English words should be given in parenthesis just after the word when it is used for the first time.
- b. Articles should use non-sexist and non-racist language.
- c. Spell out numbers from one to ninety nine, 100 and above to remain in figures. However, for exact measurement (e.g., *China's GDP growth rate 9.8 per cent*) use numbers. Very large round numbers, especially sums of money, may be expressed by a mixture of numerals and spelled-out numbers (*India's population 1.2 billion*).
- d. Single quotes should be used throughout. Double quote marks are to be used within single quotes. Spellings of words in quotations should not be changed. Quotations of 45 words or more should be separated from the text.
- e. Notes should be numbered serially and presented at the end of the article. Notes must contain more than a mere reference.
- f. Use 'per cent' instead of % in the text. In tables, graphs etc, % can be used. Use '20th century', '1990s'.
- g. Only the first word of title and subtitle should start with capitals. Although proper names are capitalised, many words derived from or associated with proper names, as well as the names of significant offices are lowercased. While the names of ethnic, religious and national groups are capitalised (*the Muslims, the Gurkhas, the Germans*), designations based loosely on colour (*black people*) and terms denoting socio-economic classes or groups (*the middle class, the dalits, the adivasis, the african-american*) are lowercased. All caste, tribe and community names (*the Santhals, the Jatavs*) are to be capitalised but generic terms (*the kayasths*) are to be lower cased. Civil, military, religious, and professional titles (*the president*) and institutions (*the parliament, the united nations*) are to be put in lower case, but names of organisations (*the Labour Party, the Students Federation of India*) are to be capitalised. The names of political tendencies (*the marxists, the social-ists*) should remain in lower case.
- h. Abbreviations are spelled out at first occurrence. Very common ones (*US, GDP, BBC*) need not be spelled out. Other commonly used abbreviations (*am, pm, cm, kg, ha*) can be used in lower case, without spaces.

3. Citations and References

Guidelines specified in the *Publication Manual of the American Psychological Association* (6th edition, 2009) must be followed.

References:

- A consolidated listing of all books, articles, essays, theses and documents referred to (including any referred to in the tables, graphs and maps) should be provided at the end of the article.
- Arrangement of references: Reference list entries should be alphabetized by the last name of the first author of each work. In each reference, authors' names are inverted (last name first) for all authors (first, second or subsequent ones); give the last name and initials for all authors of a particular work unless the work has more than six authors.
- If the work has more than six authors, list the first six authors and then use et al. after the sixth author's name.
- Chronological listing: If more than one work by the same author(s) is cited, they should be listed in order by the year of publication, starting with the earliest.
- Sentence case: In references, sentence case (only the first word and any proper noun are capitalized – e.g., 'The software industry in India') is to be followed for the titles of papers,

books, articles, etc.

- Title case: In references, Journal titles are put in title case (first letter of all words except articles and conjunctions are capitalized – e.g., Journal of Business Ethics).
- Italicize: Book and Journal titles are to be italicized.

Some examples are given below:

In-text citations:

- One work by one author: (Kessler, 2003, p. 50) or 'Kessler (2003) found that among the epidemiological samples...'
- One work by two authors: (Joreskog & Sorborn, 2007, pp. 50–66) or Joreskog and Sorborn (2007) found that..
- One work by three or more authors: (Basu, Banerji & Chatterjee, 2007) [first instance]; Basu et al. (2007) [Second instance onwards].
- Groups or organizations or universities: (University of Rajasthan, 2007) or University of Rajasthan (2007).
- Authors with same surname: Include the initials in all the in-text citations even if the year of publication differs, e.g., (I. Light, 2006; M.A. Light, 2008)
- Works with no identified author or anonymous author: Cite the first few words of the reference entry (title) and then the year, e.g., ('Study finds', 2007); (Anonymous, 1998).
- If abbreviations are provided, then the style to be followed is: (National Institute of Mental Health [NIMH], 2003) in the first citation and (NIMH, 2003) in subsequent citations.
- Two or more works by same author: (Gogel, 1990, 2006, in press)
- Two or more works with different authors: (Gogel, 1996; Miller, 1999)
- Secondary sources: Allport's diary (as cited in Nicholson, 2003).
- Films: (Name of the Director, Year of release)

References:

Books: Patnaik, U. (2007). *The republic of hunger*. New Delhi: Three Essays Collective.

Edited Books: Amanor, K. S., & Moyo, S. (Eds.) (2008). *Land and sustainable development in Africa*. London/New York: Zed Books.

Translated books: Amin, S. (1976). *Unequal development* (trans. B. Pearce). London and New York: Monthly Review Press.

Book chapters: Chachra, S. (2011). *The national question in India*. In S. Moyo and P. Yeros (Eds), *Reclaiming the nation* (pp. 67–78). London and New York: Pluto Press.

Journal articles: Foster, J. B. (2010). The financialization of accumulation. *Monthly Review*, 62(5), 1-17.

Newsletter article, no author: Six sites meet for comprehensive anti-gang initiative conference. (2006, November / December). *OOJDP News @ a Glance*. Retrieved from <http://www.ncrjs.gov/html>

[Please do not place a period at the end of an online reference.]

Newspaper article: Schwartz, J. (1993, September 30). Obesity affects economic, social status. *The Washington Post*, pp. A1, A4.

In-press article: Briscoe, R. (in press). Egocentric spatial representation in action and perception. *Philosophy and Phenomenological Research*. Retrieved from <http://cogprints.org/5780/1/ECSRAP.F07.pdf>

Non-English reference book, title translated into English: Real Academia Espanola. (2001). *Diccionario de la lengua espanola* [Dictionary of the Spanish Language] (22nd ed.). Madrid, Spain: Author.

Special issue or section in a journal: Haney, C., & Wiener, R. L. (Eds.) (2004). Capital punishment in the United States [Special Issue]. *Psychology, Public Policy, and Law*, 10(4), 1-17.

Review & Publication Policy

1. There is a board of eminent scholars of various discipline to review the quality of research articles. Articles received for publication are sent to these reviewers. They go through and evaluate the articles. All traces of author's identity are removed from the article before it is sent to the reviewer.
2. Only original and unpublished articles are accepted for publication fulfilling norms of research methodology.
3. We do not accept any charges for submission and publication of articles.
4. It is a multidisciplinary journal dedicated to Socio-Cultural Harmony. Thus, articles for publication are preferred on any subject mentioned in the Thrust Area (See at page no. 102).
5. The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and do not necessarily represent the views of the editor. The 'Sanskritik Pravah' accepts no responsibility for them.
6. The submitting author shall be informed about the selection of the article by e-mail only. Articles not accepted for publication will not be returned to the authors.
7. The article must be accompanied with an understanding that the same has not been published elsewhere and is not under review by another publication.
8. The article shall be published subject to recommendation of referees.

Ethics Policy

1. Fabrication or falsification of data with the intent to mislead is unethical as is the theft & copy of contents from others.
2. Research papers are accepted on the understanding that their contents are original and unpublished and not submitted for publication anywhere else. A certificate to this effect should accompany with the article.
3. Reproducing text from other papers without properly crediting the source is not acceptable. Authors should acknowledge the work of others used in their research and cite their publications.
4. Articles should not contain any material that is unlawful or defamatory.
5. Articles should use non-sexist and non-racist language.
6. All those who have made a significant contribution should be cited as authors. Other individuals who have contributed to the work should be acknowledged.
7. The submitting author is responsible for ensuring that the article's publication has been approved by all the other co-authors.
8. The submitting author should ensure :
 - That the work has not been published before (except in the form of an abstract or as part of a published lecture, review or thesis).
 - That the work is not under consideration elsewhere.
 - That the copyright has not been breached in seeking its publications.
 - That the publication has been approved by responsible authorities at the institute or organisation where the work has been carried out.

संस्थान के प्रमुख प्रकाशन

अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य –

1. आत्मसातीकरण का पुण्य प्रवाह
लेखक – डॉ. कृष्ण गोपाल
पृष्ठ संख्या 24, मूल्य रु. 10/-
2. इस्लाम का अंतर-दर्शन
लेखक – डॉ. श्रीरंग अरविन्द गोडबोले
पृष्ठ संख्या 256, मूल्य रु. 200/-
3. धर्म प्रचार का अधिकार : भ्रातियों एवं निवारण
– संविधान सभा में हुई बहस के संदर्भ में
लेखक – रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 32, मूल्य रु. 20/-
4. अतीत से साक्षात्कार
सम्पादक – रामप्रसाद
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 100/-
5. मतांतरण : चुनौतियाँ एवं विधिक समाधान
लेखक – रामप्रसाद एवं रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 84, मूल्य रु. 40/-
6. ईसाईयत सिद्धान्त एवं स्वरूप
लेखक – डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 304, मूल्य रु. 300/-
7. इतिहास में गुर्जर समाज-पुनरावलोकन (स्मारिका)
सम्पादक – डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
एवं डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 100/-
8. शुद्धि आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास
लेखक – डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 40/-
9. धर्मजागरण समन्वय के पुरोधा
मुकुन्द आत्माराम पणशीकर
सम्पादक – डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 280, मूल्य रु. 200/-
10. साधु स्वाध्याय संगम
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 75/-

सहयोगी प्रकाशन

1. अ.भा. वंशलेखक दिग्दर्शिका
सम्पादक – डॉ. सुनील आसोपा, डॉ. सुखदेव राव, डॉ. सूरज राव तथा डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 446, मूल्य रु. 200/-
2. संविधान में धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार,
सिद्धान्त, व्यवहार एवं चुनौतियाँ
लेखक – डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 200/-
3. सांस्कृतिक प्रवाह (जनांकिकी विशेषांक)
मुख्य सम्पादक – रामस्वरूप अग्रवाल
अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान
पृष्ठ संख्या 192, मूल्य रु. 200/-
4. वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलि
सम्पादक – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
एवं डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 150/-

उपरोक्त पुस्तकों को क्रय करने हेतु सम्पर्क करें-

प्रकाशन विभाग

अ.भा.संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

सम्पर्क : 0141-2973369 (का.) 9414312288 e-mail : editor.sprj@gmail.com



ISSN 2348-2796

Sanskritik Pravah

(A multi disciplinary refereed research journal dedicated to socio-cultural harmony)

B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

e-mail : editor.sprj@gmail.com website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor) 094600-70031(Editor)

Membership Form

1. For Institutions & Individuals :

Name:

Office Address :

Email :

Contact No. : Mobile :

2. For Individuals Only :

Academic Qualification : Post Held

Postal Address :

3. Mode of Payment (Please Tick ✓)

A. Cheque / D.D. No. Date :

(Payble to "Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvay Sansthan")

B. Deposited in SBI A/c. No : 38940233966 (Branch : Indira Bazar, Jaipur)

C. Cash/ UPI by Paytm, Bhim, Google Pay Etc.

A/C Name & No . (above) IFSC : SBIN0031403

D. Pay by Paytm, Bhim etc direct to Mobile : 9414312288

(After Payment, please inform Chief Editor or Editor)

Date :

Signature

Subscription Rates (Please Tick ✓)

Individuals		Institutions	
5 years	Life Time (15 years)	5 Years	Life Time (15 years)
(Rajasthan) ₹ 1000	₹ 2700	₹ 2200	₹ 6000
(Out of Rajasthan) ₹ 1100	₹ 3000	₹ 2200	₹ 6000

For Office Purpose :

Receipt No. Date

Cheque/ D.D./ Bank Deposit/ Cash/ Paytm/ Google Pay (₹.....)

Signature

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

(सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र)

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही देश के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, वेश-भूषा, खानपान, रीति-रिवाज, त्यौहार आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी सांस्कृतिक जीवन दर्शन की अन्तर्धारा एक ही बनी रही। सभी उपासना पद्धतियाँ या मजहब न केवल एक दूसरे के प्रति सहिष्णु रहे बल्कि सहअस्तित्व की भावना रखते हुए एक दूसरे का सम्मान भी करते रहे। भारतीय संस्कृति की इस धारा को अक्षुण्ण बनाये रखना आज की आधारभूत आवश्यकता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

संस्थान द्वारा सामाजिक समरसता व अन्य संबंधित विषयों पर सेमिनार, कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जाती हैं। अनेक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही यह शोध पत्रिका 'सांस्कृतिक प्रवाह' भी इसी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा रही है।